

Surah Yaseen Pdf

(1) यासीन

(यासीन)

(2) वल कुर आनिल हकीम

(इस पुरअज़ हिकमत कुरान की कसम)

(3) इन्नका लमिनल मुरसलीन

(ऐ रसूल) तुम बिलाशक यकीनी पैगम्बरों में से हो)

(4) अला सिरातिम मुस्तकीम

(और दीन के बिल्कुल) सीधे रास्ते पर (साबित कदम) हो)

(5) तनजीलल अजीज़िर रहीम

(जो बड़े मेहरबान (और) ग़ालिब (खुदा) का नाज़िल किया हुआ (है)

(6) लितुन ज़िरा कौमम मा उनज़िरा आबाउहुम फहुम गाफिलून

(ताकि तुम उन लोगों को (अज़ाबे खुदा से) डराओ जिनके बाप दादा (तुमसे पहले किसी पैगम्बर से) डराए नहीं गए)

(7) लकद हक कल कौलु अला अकसरिहिम फहुम ला युअ'मिनून

(तो वह दीन से बिल्कुल बेखबर हैं उन में अक्सर तो (अज़ाब की) बातें यकीनन बिल्कुल ठीक पूरी उतरे ये लोग तो ईमान लाएँगे नहीं)

(8) इन्ना जअल्ना फी अअ'ना किहिम अगलालन फहिया इलल अजक़ानि फहुम मुक़महून

(हमने उनकी गर्दनों में (भारी-भारी लोहे के) तौक डाल दिए हैं और ठुड़्डियों तक पहुँचे हुए हैं कि वह गर्दनें उठाए हुए हैं (सर झुका नहीं सकते)

(9) व जअल्ला मिम बैनि ऐदी हिम सद्दव वमिन खलफिहिम सद्दन फअग शैनाहुम फहुम ला युबसिरून

(हमने एक दीवार उनके आगे बना दी है और एक दीवार उनके पीछे फिर ऊपर से उनको ढाँक दिया है तो वह कुछ देख नहीं सकते)

(10) वसवाउन अलैहिम अअनजर तहुम अम लम तुनजिरहुम ला युअमिनून

(और (ऐ रसूल) उनके लिए बराबर है ख्वाह तुम उन्हें डराओ या न डराओ ये (कभी) ईमान लाने वाले नहीं हैं)

(11) इन्नमा तुन्जिरू मनिता तब अज़ ज़िकरा व खशियर रहमान बिल्गैब फबशिशर हु बिमग फिरतिव व अजरिन करीम

(तुम तो बस उसी शख्स को डरा सकते हो जो नसीहत माने और बेदेखे भाले खुदा का खौफ रखे तो तुम उसको (गुनाहों की) माफी और एक बाइज़ज़त (व आबरू) अज़ की खुशखबरी दे दो)

(12) इन्ना नहनु नुहयिल मौता वनकतुबु मा कद्दमु व आसारहुम वकुल्ला शयइन अहसैनाहु फी इमामिम मुबीन

(हम ही यकीन्न मुर्दों को जिन्दा करते हैं और जो कुछ लोग पहले कर चुके हैं (उनको) और उनकी (अच्छी या बुरी बाकी माँदा) निशानियों को लिखते जाते हैं और हमने हर चीज़ का एक सरीह व रौशन पेशवा में घेर दिया है)

(13) वज़ रिब लहुम मसलन असहाबल करयह इज़ जा अहल मुरसलुन

(और (ऐ रसूल) तुम (इनसे) मिसाल के तौर पर एक गाँव (अता किया) वालों का किस्सा बयान करो जब वहाँ (हमारे) पैगम्बर आए)

(14) इज़ अरसलना इलयहिमुस नैनि फकज जबूहुमा फ अज़ ज़ज्जा बिसा लिसिन फकालू इन्ना इलैकुम मुरसलुन

(इस तरह कि जब हमने उनके पास दो (पैगम्बर योहना और यूनूस) भेजे तो उन लोगों ने दोनों को झुठलाया जब हमने एक तीसरे (पैगम्बर शमऊन) से (उन दोनों को) मदद दी तो इन तीनों ने कहा कि हम तुम्हारे पास खुदा के भेजे हुए (आए) हैं)

(15) कालू मा अन्तुम इल्ला बशरुम मिसलूना वमा अनजलर रहमानु मिन शय इन इन अन्तुम इल्ला तकज़िबुन

(वह लोग कहने लगे कि तुम लोग भी तो बस हमारे ही जैसे आदमी हो और खुदा ने कुछ नाज़िल (वाज़िल) नहीं किया है तुम सब के सब बस बिल्कुल झूठे हो)

(16) कालू रब्बुना यअ'लमु इन्ना इलैकुम लमुरसलून

(तब उन पैगम्बरों ने कहा हमारा परवरदिगार जानता है कि हम यकीन्न उसी के भेजे हुए (आए) हैं और (तुम मानो या न मानो)

(17) वमा अलैना इल्लल बलागुल मुबीन

(हम पर तो बस खुल्लम खुल्ला एहकामे खुदा का पहुँचा देना फज़ है)

(18) कालू इन्ना ततैयरना बिकुम लइल लम तनतहू लनरजु मन्नकूम वला यमस सन्नकुम मिन्ना अजाबुन अलीम

(वह बोले हमने तुम लोगों को बहुत नहस क़दम पाया कि (तुम्हारे आते ही कहत में मुबतेला हुए) तो अगर तुम (अपनी बातों से) बाज़ न आओगे तो हम लोग तुम्हें ज़रूर संगसार कर देंगे और तुमको यकीनी हमारा दर्दनाक अज़ाब पहुँचेगा)

(19) कालू ताइरुकुम म अकुम अइन जुक्किरतुम बल अन्तुम कौमूम मुस रिफून

(पैगम्बरों ने कहा कि तुम्हारी बद शुगूनी (तुम्हारी करनी से) तुम्हारे साथ है क्या जब नसीहत की जाती है (तो तुम उसे बदफ़ाली कहते हो नहीं) बल्कि तुम खुद (अपनी) हद से बढ़ गए हो)

(20) व जा अमिन अक्सल मदीनति रजुलुय यसआ काला या कौमित तबिउल मुरसलीन

(और (इतने में) शहर के उस सिरे से एक शख्स (हबीब नज्जार) दौड़ता हुआ आया और कहने लगा कि ऐ मेरी कौम (इन) पैगम्बरों का कहना मानो)

(21) इत तबिऊ मल ला यस अलुकुम अजरौ वहुम मुहतदून

(ऐसे लोगों का (ज़रूर) कहना मानो जो तुमसे (तबलीख़े रिसालत की) कुछ मज़दूरी नहीं माँगते और वह लोग हिदायत याफ़ता भी हैं)

(22) वमालिया ला अअ'बुदुल लज़ी फतरनी व इलैहि तुरजऊन

(और मुझे क्या (ख़ब्त) हुआ है कि जिसने मुझे पैदा किया है उसकी इबादत न करूँ हालाँकि तुम सब के बस (आखिर) उसी की तरफ लौटकर जाओगे)

(23) अ अत्तखिजु मिन दुनिही आलिहतन इय युरिदनिर रहमानु बिजुर रिल ला तुगनि अन्नी शफ़ा अतुहुम शय अव वला यूनकिजून

(क्या मैं उसे छोड़कर दूसरों को माबूद बना लूँ अगर खुदा मुझे कोई तकलीफ़ पहुँचाना चाहे तो न उनकी सिफारिश ही मेरे कुछ काम आएगी और न ये लोग मुझे (इस मुसीबत से) छुड़ा ही सकेंगे)

(24) इन्नी इज़ल लफी ज़लालिम मुबीन

(अगर ऐसा करूँ तो उस वक़्त मैं यकीनी सरीही गुमराही में हूँ)

(25) इन्नी आमन्तु बिरब बिकुम फसमऊन

(मैं तो तुम्हारे परवरदिगार पर ईमान ला चुका हूँ मेरी बात सुनो और मानो ;मगर उन लोगों ने उसे संगसार कर डाला)

(26) कीलद खुलिल जन्नह काल यालैत कौमिय यअ'लमून

(तब उसे खुदा का हुक्म हुआ कि बेहिश्त में जा (उस वक़्त भी उसको क़ौम का ख़याल आया तो कहा)

(27) बिमा गफरली रब्बी व जअलनी मिनल मुकरमीन

(मेरे परवरदिगार ने जो मुझे बख़्श दिया और मुझे बुजुर्ग लोगों में शामिल कर दिया काश इसको मेरी क़ौम के लोग जान लेते और ईमान लाते)

(28) वमा अन्ज़लना अला कौमिही मिन बअ'दिही मिन जुन्दिम मिनस समाइ वमा कुन्ना मुनजलीन

(और हमने उसके मरने के बाद उसकी क़ौम पर उनकी तबाही के लिए न तो आसमान से कोई लशकर उतारा और न हम कभी इतनी सी बात के वास्ते लशकर उतारने वाले थे)

(29) इन कानत इल्ला सैहतौ वाहिदतन फइज़ा हुम् खामिदून

(वह तो सिर्फ़ एक चिंघाड थी (जो कर दी गयी बस) फिर तो वह फौरन चिरागे सहरी की तरह बुझ के रह गए)

(30) या हसरतन अलल इबाद मा यअ'तीहिम मिर रसूलिन इल्ला कानू बिही यस तहज़िउन

(हाए अफसोस बन्दों के हाल पर कि कभी उनके पास कोई रसूल नहीं आया मगर उन लोगों ने उसके साथ मसख़रापन ज़रूर किया)

(31) अलम यरौ कम अहलकना कबलहुम मिनल कुरुनि अन्नहुम इलैहिम ला यर जिउन

(क्या उन लोगों ने इतना भी गौर नहीं किया कि हमने उनसे पहले कितनी उम्मतों को हलाक कर डाला और वह लोग उनके पास हरगिज़ पलट कर नहीं आ सकते)

(32) वइन कुल्लुल लम्मा जमीउल लदैना मुहज़रून

(हाँ) अलबता सब के सब इकट्ठा हो कर हमारी बारगाह में हाज़िर किए जाएँगे)

(33) व आयतुल लहुमूल अरजुल मैतह अह ययनाहा व अखरजना मिन्हा हब्बन फमिनहु यअ कुलून

(और उनके (समझने) के लिए मेरी कुदरत की एक निशानी मुर्दा (परती) ज़मीन है कि हमने उसको (पानी से) जिन्दा कर दिया और हम ही ने उससे दाना निकाला तो उसे ये लोग खाया करते हैं)

(34) व जअलना फीहा जन्नातिम मिन नखीलिव व अअ'नाबिव व फज्जरना फीहा मिनल उयून

(और हम ही ने ज़मीन में छुहारों और अँगूरों के बाग लगाए और हमही ने उसमें पानी के चशमें जारी किए)

(35) लियअ' कुलु मिन समरिही वमा अमिलत हु अयदीहिम अफला यशकुरून

(ताकि लोग उनके फल खाएँ और कुछ उनके हाथों ने उसे नहीं बनाया (बल्कि खुदा ने) तो क्या ये लोग (इस पर भी) शुक़ नहीं करते)

(36) सुब्हानल लज़ी खलकल अज़वाज कुल्लहा मिम मा तुमबितुल अरजू वमिन अनफुसिहिम वमिम मा ला यअलमून

(वह (हर ऐब से) पाक साफ है जिसने ज़मीन से उगने वाली चीज़ों और खुद उन लोगों के और उन चीज़ों के जिनकी उन्हें खबर नहीं सबके जोड़े पैदा किए)

(37) व आयतुल लहुमूल लैल नसलखु मिन्हुन नहारा फइज़ा हुम् मुजलिमून

(और मेरी कुदरत की एक निशानी रात है जिससे हम दिन को खींच कर निकाल लेते (जाएल कर देते) हैं तो उस वक़्त ये लोग अँधेरे में रह जाते हैं)

(38) वश शम्सु तजरि लिमुस्त कररिल लहा ज़ालिका तक्दी रूल अज़ीज़िल अलीम

(और एक निशानी) आफताब है जो अपने एक ठिकाने पर चल रहा है ये (सबसे) गालिब वाकिफ (खुदा) का (वाधा हुआ) अन्दाज़ा है)

(39) वल कमर कद्दरनाहु मनाज़िला हता आद कल उरजुनिल क़दीम

(और हमने चाँद के लिए मंज़िलें मुक़रर कर दीं हैं यहाँ तक कि हिर फिर के (आखिर माह में) खज़ूर की पुरानी टहनी का सा (पतला टेढ़ा) हो जाता है)

(40) लश शम्सु यमबगी लहा अन तुद रिकल कमरा वलल लैलु साबिकुन नहार वकुल्लुन फी फलकिय यसबहून

(न तो आफताब ही से ये बन पड़ता है कि वह माहताब को जा ले और न रात ही दिन से आगे बढ़ सकती है (चाँद, सूरज, सितारे) हर एक अपने-अपने आसमान (मदार) में चक्कर लगा रहे हैं)

(41) व आयतुल लहुम अन्ना हमलना ज़ुररिय यतहूम फिल फुल्किल मशहून

(और उनके लिए (मेरी कुदरत) की एक निशानी ये है कि उनके बुजुर्गों को (नूह की) भरी हुयी कशती में सवार किया)

(42) व खलकना लहुम मिम मिस्लिही मा यरकबून

(और उस कशती के मिसल उन लोगों के वास्ते भी वह चीज़े (कशितयाँ) जहाज़ पैदा कर दी)

(43) व इन नशअ नुगरिक हुम फला सरीखा लहुम वाला हुम युन्कज़ून

(जिन पर ये लोग सवार हुआ करते हैं और अगर हम चाहें तो उन सब लोगों को डुबा मारें फिर न कोई उन का फरियाद रस होगा और न वह लोग छुटकारा ही पा सकते हैं)

(44) इल्ला रहमतम मिन्ना व मताअन इलाहीन

(मगर हमारी मेहरबानी से और चूँकि एक (खास) वक़्त तक (उनको) चैन करने देना (मंज़ूर) है)

(45) व इजा कीला लहुमुत तक् मा बैना ऐदीकुम वमा खल्फकुम लअल्लकुम तुरहमून

(और जब उन कुफ़ार से कहा जाता है कि इस (अज़ाब से) बचो (हर वक़्त तुम्हारे साथ-साथ) तुम्हारे सामने और तुम्हारे पीछे (मौजूद) है ताकि तुम पर रहम किया जाए)

(46) वमा तअ'तीहिम मिन आयतिम मिन आयाति रब्बिहिम इल्ला कानू अन्हा मुअ रिजीन

(तो परवाह नहीं करते) और उनकी हालत ये है कि जब उनके परवरदिगार की निशानियों में से कोई निशानी उनके पास आयी तो ये लोग मुँह मोड़े बगैर कभी नहीं रहे)

(47) व इज़ा कीला लहुम अन्फिकू मिम्मा रजका कुमुल लाहु क़ालल लज़ीना कफरू लिल लज़ीना आमनू अनुत इमू मल लौ यशाऊल लाहु अत अमह इन अन्तुम इल्ला फ़ी ज़लालिम मुबीन

(और जब उन (कुफ़र) से कहा जाता है कि (माले दुनिया से) जो खुदा ने तुम्हें दिया है उसमें से कुछ (खुदा की राह में भी) खर्च करो तो (ये) कुफ़र ईमानवालों से कहते हैं कि भला हम उस शख्स को खिलाएँ जिसे (तुम्हारे ख्याल के मुवाफ़िक) खुदा चाहता तो उसको खुद खिलाता कि तुम लोग बस सरीही गुमराही में (पड़े हुए) हो)

(48) व यकूलूना मता हाज़ल व'अदू इन कुनतुम सादिकीन

(और कहते हैं कि (भला) अगर तुम लोग (अपने दावे में सच्चे हो) तो आखिर ये (क़यामत का) वायदा कब पूरा होगा)

(49) मा यन ज़रूना इल्ला सैहतव वाहिदतन तअ खुजुहुम वहम यखिस सिमून

(ऐ रसूल) ये लोग एक सख्त चिंघाड़ (सूर) के मुनतज़िर हैं जो उन्हें (उस वक़्त) ले डालेगी)

(50) फला यस्ता तीऊना तौ सियतव वला इला अहलिहिम यरजिऊन

(जब ये लोग बाहम झगड़ रहे होंगे फिर न तो ये लोग वसीयत ही करने पायेंगे और न अपने लड़के बालों ही की तरफ लौट कर जा सकेंगे)

(51) व नुफ़िखा फिस सूरि फ़इज़ा हुम मिनल अज्दासि इला रब्बिहिम यन्सिलून

(और फिर (जब दोबारा) सूर फूँका जाएगा तो उसी दम ये सब लोग (अपनी-अपनी) क़ब्रों से (निकल-निकल के) अपने परवरदिगार की बारगाह की तरफ चल खड़े होंगे)

(52) कालू या वयलना मम ब असना मिम मरकदिना हाज़ा मा व अदर रहमानु व सदकल मुरसलून

(और (हैरान होकर) कहेंगे हाए अफसोस हम तो पहले सो रहे थे हमें ख़ाबगाह से किसने उठाया (जवाब आएगा) कि ये वही (क़यामत का) दिन है जिसका खुदा ने (भी) वायदा किया था)

(53) इन कानत इल्ला सयहतव वाहिदतन फ़ इज़ा हुम जमीउल लदैना मुहज़रून

(और पैग़म्बरों ने भी सच कहा था (क़यामत तो) बस एक सख्त चिंघाड़ होगी फिर एका एकी ये लोग सब के सब हमारे हुज़ूर में हाज़िर किए जाएँगे)

(54) फल यौम ला तुज़्लमु नफ़सून शय अव वला तुज़्जव्ना इल्ला बिमा कुंतुम तअ'लमून

(फिर आज (क़यामत के दिन) किसी शख्स पर कुछ भी जुल्म न होगा और तुम लोगों को तो उसी का बदला दिया जाएगा जो तुम लोग (दुनिया में) किया करते थे)

(55) इन्न अस हाबल जन्तिल यौमा फ़ी शुगुलिन फाकिहून

(बेहशत के रहने वाले आज (रोजे क़यामत) एक न एक मशग़ले में जी बहला रहे हैं)

(56) हुम व अज्वा जुहुम फ़ी ज़िलालिन अलल अराइकि मुत्किऊन
(वह अपनी बीवियों के साथ (ठन्डी) छाँव में तकिया लगाए तख्तों पर (चैन से) बैठे हुए हैं)

(57) लहुम फ़ीहा फाकिहतुव वलहुम मा यद् दऊन
(बहिश्त में उनके लिए (ताज़ा) मेवे (तैयार) हैं और जो वह चाहें उनके लिए (हाजिर) हैं)

(58) सलामुन कौलम मिर रब्बिर रहीम
(मेहरबान परवरदिगार की तरफ से सलाम का पैग़ाम आएगा)

(59) वम ताज़ुल यौमा अय्युहल मुजरिमून
(और (एक आवाज़ आएगी कि) ऐ गुनाहगारों तुम लोग (इनसे) अलग हो जाओ)

(60) अलम अअ'हद इलैकुम या बनी आदम अल्ला तअ'बुदुश शैतान इन्नहू लकुम अदुववुम मुबीन
(ऐ आदम की औलाद क्या मैंने तुम्हारे पास ये हुकम नहीं भेजा था कि (खबरदार) शैतान की परसतिश न करना वह यकीनी तुम्हारा खुल्लम खुल्ला दुश्मन है)

(61) व अनिअ बुदनी हज़ा सिरातुम मुस्तकीम
(और ये कि (देखो) सिर्फ मेरी इबादत करना यही (नजात की) सीधी राह है)

(62) व लक़द अज़ल्ला मिन्कुम जिबिल्लन कसीरा अफलम तकूनू तअकिलून
(और (बावजूद इसके) उसने तुममें से बहुतेरों को गुमराह कर छोड़ा तो क्या तुम (इतना भी) नहीं समझते थे)

(63) हाज़िही जहन्नमुल लती कुन्तुम तूअदून
(ये वही जहन्नम है जिसका तुमसे वायदा किया गया था)

(64) इस्लौहल यौमा बिमा कुन्तुम तकफुरून
(तो अब चूँकि तुम कुफ़र करते थे इस वजह से आज इसमें (चुपके से) चले जाओ)

(65) अल यौमा नाख़ितमु अल अफ्वा हिहिम व तुकल लिमुना अयदीहिम व तशहदू अरजु लुहुम बिमा कानू यक्सिबून
(आज हम उनके मुँह पर मुहर लगा देंगे और (जो) कारसतानियाँ ये लोग दुनिया में कर रहे थे खुद उनके हाथ हमको बता देंगे और उनके पाँव गवाही देंगे)

(66) व लौ नशाउ लता मसना अला अअ'युनिहिम फ़स तबकुस सिराता फ अन्ना युबसिरून
(और अगर हम चाहें तो उनकी आँखों पर झाड़ू फेर दें तो ये लोग राह को पड़े चक्कर लगाते ढूँढते फिरें मगर कहाँ देख पाँएंगे)

(67) व लौ नशाउ ल मसखना हुम अला मका नतिहिम फमस तताऊ मुजिय यौ वला यर जिऊन
(और अगर हम चाहे तो जहाँ ये हैं (वहीं) उनकी सूरतें बदल (करके) (पत्थर मिट्टी बना) दें फिर न तो उनमें आगे जाने का क़ाबू रहे और न (घर) लौट सकें)

(68) वमन नुअम मिरहु नुनक किसहु फिल खल्क अफला यअ' किलून
(और हम जिस शाख्स को (बहुत) ज़्यादा उम्र देते हैं तो उसे खिलकत में उलट (कर बच्चों की तरह मजबूर कर) देते हैं तो क्या वह लोग समझते नहीं)

(69) वमा अल्लम नाहुश शिअ'रा वमा यम्बगी लह इन हुवा इल्ला जिक रुव वकुर आनुम मुबीन

(और हमने न उस (पैगम्बर) को शेर की तालीम दी है और न शायरी उसकी शान के लायक है ये (किताब) तो बस (निरी) नसीहत और साफ-साफ कुरान है)

(70) लियुन जिरा मन काना हय्यव व यहिक कल कौलु अलल काफ़िरीन
(ताकि जो जिन्दा (दिल आकिल) हों उसे (अज़ाब से) डराए और काफ़िरों पर (अज़ाब का) क़ौल साबित हो जाए (और हुज्जत बाकी न रहे)

(71) अव लम यरव अन्ना खलकना लहुम मिम्मा अमिलत अय्दीना अन आमन फहुम लहा मालिकून
(क्या उन लोगों ने इस पर भी ग़ौर नहीं किया कि हमने उनके फायदे के लिए चारपाए उस चीज़ से पैदा किए जिसे हमारी ही कुदरत ने बनाया तो ये लोग (ख्वाहमाख्वाह) उनके मालिक बन गए)

(72) व ज़ल लल नाहा लहुम फ मिन्हा रक् बुहुम व मिन्हा यअ'कुलून
(और हम ही ने चार पायों को उनका मुतीय बना दिया तो बाज़ उनकी सवारियां हैं और बाज़ को खाते हैं)

(73) व लहुम फ़ीहा मनाफ़िउ व मशारिबु अफला यश्कुरून
(और चार पायों में उनके (और) बहुत से फायदे हैं और पीने की चीज़ (दूध) तो क्या ये लोग (इस पर भी) शुक्र नहीं करते)

(74) वत तखज़ू मिन दूनिल लाहि आलिहतल लअल्लहुम युन्सरून
(और लोगों ने खुदा को छोड़कर (फ़र्ज़ी माबूद बनाए हैं ताकि उन्हें उनसे कुछ मदद मिले हालाँकि वह लोग उनकी किसी तरह मदद कर ही नहीं सकते)

(75) ला यस्ता तीऊना नस रहुम वहुम लहुम जुन्दुम मुहज़रून
(और ये कुफ़ार उन माबूदों के लशकर हैं (और क़यामत में) उन सबकी हाज़िरी ली जाएगी)

(76) फला यहज़ुन्का कल्लुहुम इन्ना नअ'लमु मा युसिर रूना वमा युअ'लिनून
(तो (ऐ रसूल) तुम इनकी बातों से आजुरदा खातिर (पेरशान) न हो जो कुछ ये लोग छिपा कर करते हैं और जो कुछ खुल्लम खुल्ला करते हैं-हम सबको यकीनी जानते हैं)

(77) अव लम यरल इंसानु अन्ना खलकनाहू मिन नुत्फतिन फ़ इज़ा हुवा खासीमूम मुबीन
(क्या आदमी ने इस पर भी ग़ौर नहीं किया कि हम ही ने इसको एक ज़लील नुत्फे से पैदा किया फिर वह यकायक (हमारा ही) खुल्लम खुल्ला मुकाबिल (बना) है)

(78) व ज़रबा लना मसलव व नसिया खल्कह काला मय युहयिल इजामा व हिय रमीम
(और हमारी निसबत बातें बनाने लगा और अपनी खिलकत (की हालत) भूल गया और कहने लगा कि भला जब ये हड़्डियाँ (सड़गल कर) खाक हो जाएँगी तो (फिर) कौन (दोबारा) जिन्दा कर सकता है)

(79) कुल युहयीहल लज़ी अनश अहा अक्वला मर्रह वहुवा बिकुलली खल किन अलीम
(ऐ रसूल) तुम कह दो कि उसको वही जिन्दा करेगा जिसने उनको (जब ये कुछ न थे) पहली बार जिन्दा कर (रखा)

(80) अल्लज़ी जअला लकुम मिनश शजरिल अखज़रि नारन फ़ इज़ा अन्तुम मिन्हु तूकिदून
(और वह हर तरह की पैदाइश से वाकिफ़ है जिसने तुम्हारे वास्ते (मिखर और अफ़ार के) हरे दरख़्त से आग पैदा कर दी फिर तुम उससे (और) आग सुलगा लेते हो)

(81) अवा लैसल लज़ी खलकस समावाती वल अरज़ा बिकादिरिन अला य यख्लुका मिस्लहुम बला वहुवल खल्लाकुल अलीम

(भला) जिस (खुदा) ने सारे आसमान और ज़मीन पैदा किए क्या वह इस पर काबू नहीं रखता कि उनके मिस्ल (दोबारा) पैदा कर दे हों (ज़रूर काबू रखता है) और वह तो पैदा करने वाला वाकिफ़कार है)

(82) इन्नमा अमरूहू इज़ा अरादा शय अन अय यकूला लहू कुन फयकून
(उसकी शान तो ये है कि जब किसी चीज़ को (पैदा करना) चाहता है तो वह कह देता है कि "हो जा" तो (फौरन) हो जाती है)

(83) फसुब हानल लज़ी बियदिही मलकूतु कुल्ली शय इव व इलैहि तुरज उन
(तो वह खुद (हर नफ़स से) पाक साफ़ है जिसके कब्ज़े कुदरत में हर चीज़ की हिकमत है और तुम लोग उसी की तरफ
लौट कर जाओगे)

bestpdf.in